

मीडिया के कार्य को जन जन के जहन में पहुँचायें

अगर देखा जाये तो मीडिया लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ के रूप में बहुत उम्दा है। मीडिया अपने मायने को खुद साबित करता है। तो कई जगह असमंजस की स्थिति बनी रहती है। वैसे तो जनमानस मीडिया के साथ ही है। जहां आज का दौर तो बिल्कुल ही अछूता नहीं है। सभी जो इसके द्वारा सुनते हैं, देखते हैं, उसको ही आधार बनाकर चलने लग पड़ते हैं। आजकल सोशल मीडिया हमारे मन की स्थिति को ऊपर-नीचे करने के लिए सक्रिय भूमिका निभाता है। जैसे कि फेसबुक, ट्वीटर, वॉट्सएप। इसका खेल कितना अनोखा है, अगर वॉट्सअप ग्रुप बना है, एक ने अगर शॉपिंग की तो सबको पता चल जाता है। इससे क्या सिद्ध हो रहा है कि पब्लिक क्या कर रही है और क्या कर सकती है। छोटे-छोटे चमत्कार हो रहे हैं। कहां घटनायें घट रही हैं, यह पलभर में पता चल जाता है। कई बार ध्यान न रखने के कारण या लापरवाही के कारण घटना घटित हो जाती है। लेकिन उसे मीडिया ने फैला दिया तो, वो



- ब्र.कु. गंगाधर

घटना कल हमारे साथ भी हो सकती है, ऐसी सोच हमारी बन जाती है। ऐसी परिस्थितियों में अध्यात्मिकता का खेल शुरू हो जाता है। अध्यात्मिकता हमें सिखाती है कि कोई भी बात आपके सामने आते ही उसके दो पहलू होते हैं - एक. सकारात्मक दूसरा. नकारात्मक। सकारात्मक पहलू हमेशा आपको सकारात्मक ही रखेगा। लेकिन कई बार हम अगर शक्तिशाली न हों तो घटना से प्रभावित हो जायेंगे। अब हम उदाहरण देकर आपको बताना चाहते हैं कि कोई काम हमने कई सालों तक किया तो उसकी हमें आदत पड़ी हुई है, और जैसे ही वैसे घटना होती है, उसका हम पर प्रभाव पड़ जाता है। आज दुनिया में इस समय अधिक से अधिक नकारात्मक वातावरण का साया है। इस नकारात्मकता के वातावरण में हम जो भी सोच रहे हैं, उसमें सब नकारात्मकता का पहलू ही देखते हैं। ऐसे में मीडिया को अध्यात्मिकता के रूप से सशक्त होना ही चाहिए।

जो कुछ भी सकारात्मक परिवर्तन के आधार से पब्लिक के सामने रखेंगे, वो जनमानस के जहन में उतरेगा और हम सकारात्मक विश्व की ओर बढ़ना शुरू हो जायेंगे। हो सकता है शुरू में इसका प्रभाव कम हो, लेकिन धीरे-धीरे इसका प्रभाव समाज में व्यापक हो जायेगा। मीडिया का काम अच्छे समाज का निर्माण करना है, लेकिन दुनियावी जागृति के चक्कर में हम बहुत-कुछ ऐसा परोस रहे हैं जो हमें गंदगी की तरफ ले जा रहा है। तो हमें पवित्र सोच, पवित्र विचारों को जगह देनी ही होगी। तब जाकर मीडिया जनमानस को वो दे पायेगा, जो देना चाहते हैं। इसीलिए ही सभी सुकून चाहते हैं और इस कारण से ही ऐसे आध्यात्मिक वातावरण में आते हैं और सारी दुनिया से कट जाते हैं। ऐसी सकारात्मक दुनिया में आते ही हमें ऐसा लगता है कि सारी दुनिया ऐसी ही होनी चाहिए। इससे एक बात तो सिद्ध होती है कि हम शुरू से ही सकारात्मक रहे हैं, तभी तो सकारात्मकता हमें आकर्षित करती है। बस जीवन को सकारात्मक बनाइये और ऐसे वातावरण का पूरा लाभ उठाइये और खुश हो जाइये। हरेक व्यक्ति मीडिया है, मीडियम है, जो हमेशा जनमानस तक पहुंच रहा है।

ऐसे में हमें आध्यात्मिक रूप से सशक्त होना ही होगा। तब ही हम सकारात्मक ऊर्जा को प्रवाहित कर पायेंगे और हम जैसा चाहते हैं, वैसा कर पायेंगे। बस इसके लिए और कुछ नहीं करना है, सिर्फ हमें अपने साथ बैठकर अपने में निहित पॉजिटिव एनर्जी को देखना है और उसे बाहर लाना है। ये रोज़ करने पर हमारे में वो शक्तियाँ आयेंगी, जिसके लिए हम हैं। और हमें क्या करना है, बस आरंभ कर दीजिये, शुरुआत कर दीजिये। इस कार्य के लिए मेडिटेशन को भी अपने जीवन की दिनचर्या में शामिल करें, तो ये और ही ज़्यादा हमारे लक्ष्य को हासिल करने में सहायक होगा। कई बार कार्य का बोझ आपको विचलित कर सकता है, पर हमें दृढ़ता के साथ उसे प्राथमिकता देखकर करना ही होगा। तो किसी खूब कहा है... 'अंधेरा घना है, पर दीया जलाना कहाँ मना है...'। बस अपना हौसला बढ़ाइये और अपने कार्य में लग जाइये।

सफल करने का गुण धारण करो तो स्वतः सम्मान के पात्र बन जायेंगे

पढ़ाई कहती है तुम चेक करो- लगाव है क्या? लगाव नहीं है, सेवा अर्थ देह, सम्बंध दुनिया मदद कर रही है। सतयुग में अपने आप शरीर, सम्बंध, सब अच्छा होगा। लौकिक दुनिया वालों की तरह सारा दिन धन, सम्बंध का ख्याल न चले। हम सेवाधारी हैं। मेरा-मेरा कुछ नहीं है, सम्बंध सबके साथ है। किसी के सम्बंध के अधीन नहीं हैं। यदि मैं बालक हूँ तो भी बाबा हैं। यदि मैं बालक हूँ तो भी बाबा सम्भाल करने वाला बैठा है। बूढ़े हैं तो भी बाबा बैठा है। जवान को सम्भाल की ज़रूरत नहीं। सम्बंधों की अधीनता भी दुःखी बना देती है। अटैचमेंट दुःख देता है। अच्छे गुण, अच्छे कर्म, अच्छे धन-सम्बन्ध में कमी नहीं होने देंगे। ऐसे नहीं जिसके पास धन



दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

है, वह गुणवान है। जिसके पास गुण है वो जहाँ भी बैठेगा उसको मान मिलेगा, इज़्जत मिलेगी। धनवान इज़्जत के लिए धन दान करता है। गुणवान को अपने आप इज़्जत मिलती है। अच्छे कर्म करने से अपने आप दुआएं मिलती हैं। धन दान करने वाला यदि नाम का भिखारी है तो दुआएं नहीं मिलती। दुआएं तब मिलती हैं जब नाम का इच्छुक नहीं है। सब सफल हो जाये। निष्फल न जाये- यह भावना हो। बाबा कहता है संकल्प, धन, श्वास निष्फल न जाये। समय भी सफल करते हैं तो इज़्जत मिलती है। समय जो निष्फल करता है वो इज़्जत नहीं पाता है। सवेरे से रात्रि तक का समय सफल करो। समय, श्वास, संकल्प जो भी मेरा है, उसे सफल से वर्सा मिलता है। बाबा का बच्चा वह जो ज़रा भी निष्फल ना करे। अनेकों को खुश रहने के लिए टी.वी. देखनी पड़ती है, तो ऐसी अधीनता भी न हो जो समय निष्फल जाये। हमारा समय, श्वास, संकल्प व्यर्थ किसको खुश करने के लिए न हो। जीवन को ऊंच बनाने के लिए किसी को सहयोग चाहिए तो दो। किसी को सहयोग मिला, ऊंचा उठने के लिए पंख मिले, तो यह अच्छे वायब्रेणस से ही हो सकता है। हमारी आत्म अभिमानी स्थिति औरों को उड़ने में मदद करेगी। तो और बातों के चिन्तन के बजाय हमारे पुरुषार्थ का तरीका बहुत एक्ज्यूरेट हो, जिससे हमारी प्रालम्ब तो बनेगी, किंतु औरों को भी प्रालम्ब बनाने में मदद मिलेगी।

मर्सीफुल बन दुआएं दो, दुआएं लो

मैं आत्मा हूँ, यह अभ्यास बीच-बीच में करना चाहिए। शरीर के भान में रहने का अभ्यास नैचुरल हो गया है, नेचर हो गया है, ऐसे ही मैं आत्मा हूँ, यह हमारी नेचर नैचुरल हो जाये, सेकेण्ड में याद करे मैं अशरीरी हूँ। आत्मा हूँ। आत्मा रूप में स्थित हो जाओ तो हो सकते हैं ना? बस, यह प्रैक्टिस सारे दिन में घड़ी-घड़ी हो। तो काम करते भी मैं आत्मा करावनहार हूँ मालिक हूँ, मैं बादशाह हूँ, राजा हूँ। आत्मा इस बॉडी में जो भी कर्मेन्द्रियाँ हैं मन बुद्धि संस्कार हैं, सबके ऊपर राजा है। तो यह कर्मेन्द्रियाँ, इसकी मैं मालिक आत्मा हूँ, यह स्मृति पक्की रहनी चाहिए। फिर बाबा की याद कोई मुश्किल नहीं। समय तो हमारी क्रियेशन है, क्रियेटर तेज है या क्रियेशन तेज है? कौन तेज है? तो बाबा रिज़ल्ट पूछेंगे, इसलिए आप अब ऐसा



दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

पुरुषार्थ करो तो बाबा को अच्छी वेस्ट हो जाता है। इससे नुकसान रिज़ल्ट दे सकेंगे। बाबा भी वरदान देंगे, खुश होंगे। वैसे तो बाबा खुश रहता है, लेकिन खुशी में खुशी। और आजकल बाबा ने तो बहुत सहज पुरुषार्थ बता दिया कि दुआयें दो और दुआयें लो। कोई बद्-दुआ दे तो भी उसको आप दुआ दो। बस। बद्-दुआ माना खराब चीज़, तो बाबा कहते हैं बद्-दुआ देता है तो उस समय कैसे हम बद्-दुआ सुनते हुए भी उसको चेंज करें? उस समय आप अपने

को यह समझो कि मैं मर्सीफुल हूँ, रहमदिल हूँ, वह बिचारा परवश है, कोई क्रोध के वश है, कोई ईर्ष्या के, कोई लोभ के, कोई मोह के वश, कोई अभिमान के वश... तो बिचारे परवश होने के कारण ऐसा करते हैं। तो ऐसे परवश के कारण कभी किसी को क्रोध नहीं आता है और आना भी नहीं चाहिए। जान-बूझके कोई करता है तो वो अलग बात है। तो बाबा कहते हैं हमको मर्सीफुल स्टेज में रहना चाहिए क्योंकि तुम्हारे जड़ चित्र लास्ट जन्म तक भी मर्सी देते हैं, तब तो मांगते हैं - दया करो, कृपा करो। तो बाबा कहते तुम अभी भी मर्सीफुल, दयालु, कृपालु बनो ना! अच्छा, बिचारे ने परवश होके किया, गुस्सा करने वाला तो गुस्सा करके शान्त हो गया, लेकिन जिसने उसे अंदर मन में फील किया उसको चैन नहीं आता है, कितना समय उसका यूँ ही हो जाता है। इससे नुकसान तो पहले अपने को ही होता है, इसलिए बाबा ने कहा है मर्सीफुल हो करके रहो तो दुआ दे सकेंगे, ले भी सकेंगे, तो आपके पुण्य का खाता जमा हो जायेगा। जिसका यह खाता जितना जमा होगा वो हर जन्म में सदा खुश होगा। और हमें तो बाबा ने इक्कीस जन्म की गैरंटी दी है। तो दुआ दो और दुआ लो - यह विधि बहुत सहज है, बहुत अच्छी विधि है, यह भी करते रहो तो आपके पुण्य का खाता जमा होता रहेगा, जिससे आप सदा सुखी रहेंगे, सब प्राप्तियाँ होंगी।

दिलतख्तनशीन, सो बेफिक्र बादशाह

हम सब हैं बेफिक्र बादशाह की फिकरात करते? बस यही बाबा के बच्चे- सदा बेगमपुर के बादशाह। हमें न कोई भी फिकर होता, न कोई चिन्ता होती, न कोई चिन्तन चलता, क्योंकि हम निमित्त हैं। फिकरात करने वाला करे, मैं क्यों करूँ? मुझे आप कहते हो कि यह कार्य करो तो मैं करती हूँ। तू कराने वाला है, हम निमित्त हैं। अच्छा है तो भी आप बैठे हो, गलत हुआ तो भी आप जवाबदार हो। तो फिकरात किसकी? कोई बात है प्लान करो, राय करो- कैसे करें, क्या करें, लेकिन चिन्ता किस चीज़ की! चिन्ता चिता के बराबर है, इसलिए संगमयुग की विशेषता है - बेफिक्र बादशाह बने। आप परमात्मा के दिलतख्त पर बैठ जाओ तो किसी चीज़ की फिकर नहीं होगी। जो खिलावे सो खाना है, जो पहनावे सो पहनना है, अगर उसे हमें बेगरी पार्ट में रखना होगा तो भी हम उसमें राजी, अगर हमें राजकुमारों की तरह पालेंगे तो भी राजी हैं। बाकी किस चीज़ की चिन्ता! हम कहते हैं करो। हमारा एक ही मन्त्र है - जी हज़ूर हम हाज़िर हैं। वह हज़ूर है, जो हुक्म करे। बाकी चिन्ता क्यों चिन्ता करते? किस बात

को फिकरात करते? बस यही बाबा के बच्चे- सदा बेगमपुर के बादशाह। हमें न कोई भी फिकर होता, न कोई चिन्ता होती, न कोई चिन्तन चलता, क्योंकि हम निमित्त हैं। फिकरात करने वाला करे, मैं क्यों करूँ? मुझे आप कहते हो कि यह कार्य करो तो मैं करती हूँ। तू कराने वाला है, हम निमित्त हैं। अच्छा है तो भी आप बैठे हो, गलत हुआ तो भी आप जवाबदार हो। तो फिकरात किसकी? कोई बात है प्लान करो, राय करो- कैसे करें, क्या करें, लेकिन चिन्ता किस चीज़ की! चिन्ता चिता के बराबर है, इसलिए संगमयुग की विशेषता है - बेफिक्र बादशाह बने। आप परमात्मा के दिलतख्त पर बैठ जाओ तो किसी चीज़ की फिकर नहीं होगी। जो खिलावे सो खाना है, जो पहनावे सो पहनना है, अगर उसे हमें बेगरी पार्ट में रखना होगा तो भी हम उसमें राजी, अगर हमें राजकुमारों की तरह पालेंगे तो भी राजी हैं। बाकी किस चीज़ की चिन्ता! हम कहते हैं करो। हमारा एक ही मन्त्र है - जी हज़ूर हम हाज़िर हैं। वह हज़ूर है, जो हुक्म करे। बाकी चिन्ता क्यों चिन्ता करते? किस बात



दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका

में रहते, थोड़ा बहुत भाव-स्वभाव आता, थोड़ा चिन्तन चलता- इसकी भी विधि सीखो। आप आपस में दो लोग रहते, आपकी आपस में नहीं बनती, आप कहते हैं यह बुरा, वह कहता यह बुरा, अच्छा यह भी बुरा, यह भी बुरा। लेकिन कोई तो अच्छाई होगी या नहीं होगी? तो अच्छाई से बात करो ना। तो जब तुम अच्छाई वाले से बात कर लेंगे तो बुराई आपेही खत्म हो जायेगी। बुराई को देखकर बात नहीं करो। जिसको बाबा कहते तुम शुभ-भावना रखो तो शुभ भावना से कामना पूरी होती है। फिर हम किसके लिए लड़ें!